कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय ....हिन्दी....

परीक्षा का दिन....शुक्रवार....

दिनांक ....16-3-19....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

परीक्षक के हस्ताक्षर ....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिक पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेग
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामा नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचि साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनि उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं हो चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परी समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ क उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - 1

उत्तर. 1 'स्वतन्त्रता में नारी का योगदान'।

उत्तर. 2 शिक्षा के प्रचार - प्रसार के कारण से नारियाँ आत्मविश्वास से भर गईं।

उत्तर. 3 आधुनिक नारी का आजादी में अविस्मरणीय योगदान रहा। उन्होंने अपनी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ समाज को स्वतन्त्रता के महत्त्व को समझाने का प्रयास किया। सभी महिलाओं ने घर - गृहस्थी छोड़ दी एवं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया।

उत्तर. 4 जो आदमी सच से अवगत नहीं है तथा अपनी कपोल - कल्पनाओं (सपनों) में खोया हुआ है, उस आदमी को जगाने की बात कविता में कही गई है।

उत्तर. 5 यदि आदमी को वक़्त पर नहीं जगाया जाएगा तो सम्पूर्ण संसार उसे आगे निकल जाएगा अर्थात् प्रगति कर लेगा, इसलिए जगना (सचेत होना) आवश्यक है।

उत्तर. 6 जो आदमी घबरा कर भागता है वह पीछे ही रह जाता है क्योंकि वह उससे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

आत्मविश्वास की कमी होती है, किन्तु जो क्षिप्र गति से चलता है वह सफल हो जाता है क्योंकि वह पहले से ही सजग रहता है।

खण्ड - 3

उत्तर · 9 जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

उदाहरण - पढ़ना, जाना, खाना।

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं -

* अकर्मक क्रिया → जिस क्रिया के साथ कर्म नहीं होता है तथा क्रिया का फल एवं व्यापार पूर्णतया कर्त्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

* सकर्मक क्रिया → जिस क्रिया के साथ कर्म होता है तथा क्रिया का फल कर्त्ता के अतिरिक्त कर्म पर भी पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

उत्तर · 10 कारक → 'के द्वारा' विभक्ति के कारण यहाँ करण कारक है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

काल → भूतकाल (लिखा गया → क्रिया)

वाच्य → कर्मवाच्य

उत्तर.11 'गजानन' शब्द में बहुव्रीहि समास है।

विशेषताएँ → जिस समास में कोई भी पद प्रधान न हो तथा समस्तपद के दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की विशेषता प्रकट करते हैं, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।
'गजानन' पद से गणेश पद की प्रधानता बताई है।

उत्तर.12 (क) मुझे अभी जाना है।

(ख) मेरे पास केवल पचास रुपये हैं।

उत्तर.13 (क) बहाने बनाना।

(ख) क्रोध पर संयम न रख पाना।

उत्तर.14 अयोग्य प्रशासक के शासन पर धाँधली।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - 4

उत्तर.15 बूझत स्याम - - - - - - - - - - - - - - भोरी।

प्रसंग → उपर्युक्त पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' से संकलित है। मूलतः यह अवतरण महाकवि सूर-दास 'लीला-विलास' से उद्धृत है। इस पद्यांश में रसिक शिरोमणि श्री-कृष्ण एवं भोली-भाली किशोरी रा-धा के प्रथम मिलन का वर्णन है।

व्याख्या → कृष्ण के अनन्य भक्त कवि सूरदास जी कहते हैं कि एक बार ब्रज की गलियों में श्रीकृष्ण एवं राधा की यकायक भेंट हो गई। अपरिचय की दीवार कृष्ण की पहल से टूटती है और वे राधा को सम्बोधित कर पूछते हैं कि - "हे गोरी! तुम कौन हो? कहाँ रहती हो? एवं किसकी पुत्री हो? हमने तो तुम्हें कभी ब्रज की गलियों में नहीं देखा", फिर रा-धा अपने भोलेपन का प्रत्यक्ष प्रमाण देते हुए उत्तर देती हैं कि - "हम भला ब्रज की गलियों में क्यों आएँगे, हमारा यहाँ से कोई नाता नहीं है, हम तो अपनी ही दहलीज़ पर खेलते हैं, किन्तु हमने यह अवश्य सुना है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कि नन्द का पुत्र अर्थात नंदलाल यहाँ मक्खन और दही चोरी करता फिरता है"। राधा के इन वचनों को सुनकर वे उनके प्रति आकर्षित हो जाते हैं एवं रसपूर्ण स्वभाव से कहते हैं कि "हे गोरी, हम तुम्हारा क्या चुरा लेंगे? आओ हमारे साथ जोड़दार बनकर खेलो"। श्रीकृष्ण राधा के समक्ष साथ खेलने का प्रस्ताव रखते हैं और भोली किशोरी राधा उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है। सूरदास जी कहते हैं कि मेरे प्रभु रसिक शिरोमणि हैं अर्थात रससिद्ध बातों में श्रेष्ठ हैं, इसीलिए वे भोली राधा को अपनी बातों में उलझा लेते हैं।

विशेष (i) राधा एवं कृष्ण की प्रथम भेंट का वर्णन बड़ी सुन्दरता से किया है।

(ii) ब्रज भाषा की गेयता का निर्वाह हुआ है।

(iii) अनुप्रास एवं आक्षेप अलंकार प्रयुक्त है।

उत्तर 16 ईर्ष्या - - - - - - - - - - - देगा।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' का अंश है। यह गद्यांश

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

राष्ट्रभक्त कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'ईर्ष्या! तू न गई मे मन से' शीर्षक निबन्ध से उद्धृत है। इस अंश में लेखक ने ईर्ष्यालु मनुष्यों को ईर्ष्या से बचने के लिए क्या करना चाहिए? इसका उपाय बताया है।

व्याख्या → लेखक कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति ईर्ष्या से ग्रस्त है तो उसे इस भयावह दोष से बचने का प्रयास अवश्य करना चाहिए अन्यथा मनुष्य जहर की चलती-फिरती गठरी बनकर रह जाएगा। और इसका एक-मात्र उपाय मानसिक अनुशासन है। तात्पर्य यह है कि हममें मानसिक रूप अनुशासन हो, जो व्यक्ति ईर्ष्या-ग्रस्त है उसे इस बात की चिंता छोड़ देनी चाहिए कि अगले व्यक्ति के पास क्या है? या वह इतना स-मृद्ध एवं प्रसन्न क्यों है? इन बेतुकी बातों पर ध्यान केन्द्रित न करके इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हममें (ईर्ष्यालु व्यक्ति में) क्या कमी है? तथा इस कमी को दूर करने का उपाय क्या है? ऐसा कौनसा उपाय है जिस-से किसी से ईर्ष्या किए बिना सफल होया जा सके? इसका रचनात्मक उपाय क्या हो सकता है? लेखक अपने निबंध

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

को अन्त में यह कहते हुए समाप्त करते हैं कि जिस दिन या क्षण ईर्ष्यालु व्यक्ति कोमें अपनी कमियों को दूर करने की जिज्ञासा (जानने की इच्छा) आ जाएगी, उस दिन से वह ईर्ष्या को छोड़ उन्नति के पथ पर अग्रसर हो जाएगा। इसके लिए गुणों का विकास करना एवं हृदय को निर्मल बनाना अत्यावश्यक है। दूसरे की प्रसन्नता से बिना चिढ़े स्वयं को सफल बनाना ही ईर्ष्या को दूर करने का एकमात्र उपाय है।

विशेष - (i) मानसिक अनुशासन की महत्ता को प्रकट किया है।

(ii) भाषा सरल, भावानुकूल एवं प्रवाहपूर्ण है।

(iii) कथन शैली वर्णनात्मक है।

उत्तर.17 लक्ष्मण परशुराम संवाद रामचरितमानस के बालकाण्ड से उद्धृत है। प्रौढ़ अवधी भाषा में रचित यह संवाद जीवन में कई आदर्शों को अपनाने की सीख भी देता है। गोस्वामी तुलसीदास जी की भाषा शैली एवं संवाद शैली पात्र

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

नुकूल सटीक है। धनुर्यज्ञ के पश्चात् शिव धनुष भंग होने पर परशुराम क्रोध में तमतमाते हुए जनक दरबार में आते हैं। संवाद का प्रारम्भ श्रीराम करते हैं और कहते हैं -

"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा"।

अर्थात् हे नाथ! शिव धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई सेवक होगा।

परशुराम जी प्रत्युत्तर देते हैं - "सेवक सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई"। अर्थात सेवक वही होता है जो सेवा करता है किन्तु शिव धनुष तोड़ने वाले ने शत्रुता का कार्य किया है। अतः जिसने भी शिव धनुष तोड़ा है वह सामने आ जाए। इससे राम की विनयशीलता एवं परशुराम के क्रोधी स्वभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। लक्ष्मण भी चुप नहीं रहते हैं और बोलते हैं कि आप अकारण क्रोध कर रहे हैं। राम ने तो इसे नया समझा था किन्तु यह तो छूते ही टूट गया, इस पर परशुराम बोले कि तू मेरा स्वभाव नहीं जानता। मैं बहुत क्रोधी हूँ, मेरा यह फरसा सहस्त्रबाहु की भुजाओं को छेदने वाला है। इस प्रकार व्यंग्योक्तियों से लक्ष्मण एवं परशुराम में संवाद होता है। जो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

राम के शक्ति परीक्षण एवं विश्वामित्र के समझाने पर समाप्त होता है।

संवाद का कलापक्ष - सम्पूर्ण संवाद को आकर्षक बनाने के लिए लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग किया है, जैसे -

'कुम्हड़बतिया होना, चहत उड़ावन फूँकि पहारू, हरिअरइ सूझ, कालकवलु क्षण माहिं, माथे काढ़ा'।

छन्द - चौपाई - दोहा छन्द की गति-यति सुन्दर है।

रस - रौद्र रस एवं वीर रस का मुख्य प्रयोग है।

अलंकार - अनुप्रास, उपमा, अतिशयोक्ति उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, एवं आक्षेप अलंकारों की बहुतायत है।

उत्तर-18 लोक संत पीपा का जीवन - राजस्थान के प्रमुख संतों में गिने जाने वाले 'खींची चौहान राजवंश में जन्मे लोक संत पीपा ने मध्यकालीन निर्गुण भक्ति काव्यधारा को गौरवान्वित किया, पिता की मृत्यु के उपरान्त राजपाट सम्भाल

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

लिया। इनका जन्म वि.स. 1390 में झालावाड़ जिले के 'गागरौन' में हुआ। कुशल शासक एवं धीर-गम्भीर स्वभाव के कारण ये अपनी प्रजा के चहेते थे, अपने साहस के आधार पर राज्य का विस्तार भी किया, धन-सम्पदा एवं वैभव की परित्याग कर अपना सम्पूर्ण जीवन समाज सुधार एवं निर्गुण भक्ति को समर्पित कर दिया, पीपा पहले मूर्तिपूजक थे। देवी दुर्गा के उपासक थे। एक बार इनके राज्य में वैष्णव भक्त मण्डली आई जिसके मुखिया ने इन्हें काशी जाकर गुरु रामानन्द गुसाईं से मिलने की सलाह दी। ये अपनी रानी सीता के साथ काशी गए। किन्तु गुरु ने इनको बिना धन-सम्पदा के आने के लिए कहा, धन निर्धनों में बँटवा दिया एवं गुरु रामानन्द से दीक्षा प्राप्त करी फिर पुनः गागरौन लौट आए। संत पीपा का मन राजकाज से उचट गया, उनकी सोई हुई आत्मा जाग उठी, अपना सम्पूर्ण जीवन परमार्थ को समर्पित कर दिया, इनका जीवन प्रेरणादायी है।

<u>शिक्षा</u> - संत पीपा मानते थे कि आत्मा एवं परमात्मा एक ही है। भाव शरीर में जो आत्मा है यही परमात्मा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

इन्होंने बाह्याडम्बरों, दुर्व्यसनों एवं रूढ़िवादी विचारों का खण्डन किया। ये संत कबीर के समर्थक थे। ये कहते थे कि कोई ब्राह्मण एवं शूद्र नहीं होता। सब एक ही माता-पिता की संतान हैं। इन्होंने अपनी भक्ति-भावना से समाज के उपेक्षित वर्ग में आत्मविश्वास, दृढ़ता एवं चेतना का संचार किया। ये 'अद्वैतवाद' के समर्थक थे। कर्तव्यनिष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा लोक संत पीपा ने हमें दी है।

उत्तर.19 प्रस्तुत सोरठा चारण कवि कृपाराम खिड़िया के द्वारा रचित हैं तथा इसके माध्यम से वे यह संदेश देना चाहते हैं कि हमेशा व्यक्ति को मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। रसना अर्थात् वाणी का ही चमत्कार होता है जो कि कोयल को प्रिय एवं कौए को उसकी कर्कश वाणी के कारण अप्रिय बना देता है। अतः सदैव मीठा बोलें तथा आवश्यकतानुकूल बोलें।

उत्तर.20 'मातृ-वंदना' कविता में कवि 'निराला' का राष्ट्र प्रेम मुखरित हुआ है। वह अपने जीवन के समस्त कर्म-फलों को

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मातृभूमि को अर्पित कर स्वयं को सौभाग्यशाली मानता है। वह, मनुष्यों के जीवन के सम्पूर्ण स्वार्थों को भी मातृभूमि पर अर्पित करना चाहता है। वह अपना क्लेद युक्त शरीर जीवन धन मन तथा श्रम द्वारा अर्जित फलों को मातृभूमि को करना चाहता है। वह अपना तन-मन-धन मातृभूमि को समर्पित करना चाहता है।

उत्तर॰21 'कन्यादान' कविता वर्तमान में प्रासंगिक है क्योंकि आजकल स्त्रियों का शोषण किया जा रहा है। ~~नवविहत~~ नवविवाहिता को ससुराल वाले दबाने का प्रयास करते हैं। उसको मानसिक एवं शारीरिक यातनाएँ देते हैं। अंततः वह हार मानकर आत्महत्या कर लेती है। वह इस स्वार्थरत समाज के दमनकारी चक्र में फँस जाती है। तथा स्वाभिमान भी खो देती है। ऐसे में यह कविता उनको जागरूक करने के लिए प्रासंगिक है।

उत्तर॰22 लेखक के मन में सबसे पहला विचार देवालय बनाने का आया। किन्तु अंग्रेजी शिक्षा के बढ़ते प्रसार को देखकर उसे यह विचार त्यागना पड़ा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

लेखक को लगा कि जिस प्रकार अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार - प्रसार हो रहा है, उस स्थिति में तो देवालय बनाना महान् बेवकूफी होगी। क्योंकि कोई भी देवलाय की तरफ मुँह मोड़कर भी नहीं देखेगा।

उत्तर॰23 भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है, इस देश के उत्तर भाग में पहाड़ो, नदियों एवं मैदानों की बहुतायत है तो वहीं दक्षिण भाग में 'कन्याकुमारी का अस्तित्व है। कन्याकुमारी सूर्यास्त एवं सूर्योदय की भूमि कही जाती है। बंगाल की खाड़ी, अरब सागर एवं हिन्द महासागर का मिलन इस स्थान से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है यहाँ का 'सूर्योदय' देखने लोग दूर-दूर से आते हैं। इससे कथन का स्पष्टीकरण हो जाता है।

उत्तर॰24 संत दादू दयाल ने अपने शिष्यों परनिंदा न करने की शिक्षा दी। ये कहते थे कि - दादू निंदा ताको भावै जाके हिरदे राम न आवै। अर्थात निंदा करना उसी को अच्छा लगता है जिसके हृदय में राम का स्थान नहीं होता है।

ये यह भी कहा करते थे कि निंदा और स्तुति को समभाव से ग्रहण करना चाहिए। निन्दकों से तर्क-वितर्क नहीं करने चाहिए।

उत्तर॰25 कल्याणपुर, साँभर, आमेर, नराणा, भैराणा,

उत्तर॰26 दिन-रात हरि-सुमिरन में लगे रहने से संत पीपा का मन राजकाज से उचट गया।

उत्तर॰27 श्याम ने झूला झूलने के लिए गोपी या राधा को आमन्त्रित किया

उत्तर॰28 ग्रीष्म ऋतु के प्रचण्ड ताप से खेतों की मिट्टी पथराई हुई थी।

उत्तर॰29 (i) महाकवि निराला - छायावाद के प्रमुख कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' उपनाम से प्रसिद्ध थे। इनका जन्म 15 अक्तूबर 1864 को बंगाल के 'मेदिनीपुर' में वसंत पंचमी के दिन हुआ इनकी औपचारिक शिक्षा हाईस्कूल तक हुई। संस्कृत, बांग्ला एवं हिन्दी भाषा पर में कवि को विस्तृत ज्ञान था। 3 वर्ष की आयु मे माता तथा युवावस्था में

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

पिता साथ छोड़ गए। फिर पि पत्नी, भाई - भाभी, चाचा एवं पुत्री ~~सरोस~~ 'सरोज' की मृत्यु ने निराला को भीतर से झकझोर दिया।

रचनाएँ - अनामिका, परिमल, कुकुरमुत्ता, रानी और कानी।

(iii) देव - रीतिकाल के प्रमुख कवि 'देव' का जन्म संवत 1730 में हुआ। ये इटावा के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम 'बिहारीलाल दुबे' बताया जाता है। देव की 52 रचनाएँ प्राप्त होती हैं। इन्होंने केशव की भाँति आचार्य कर्म का निर्वाह किया। संस्कृत, प्राकृत एवं उत्तरभारत की बोलियों का प्रयोग किया। मूलतः 'ब्रज भाषा' का। इनका निधन संवत 1824 में हुआ।

रचनाएँ - भावविलास, भवानीविलास, सुजान-विनोद, प्रेमतरंग।

उत्तर०30 (i) एक ही ओर रास्ता संकेत।

(ii) साइकिल के प्रवेश पर प्रतिबंध।

(iii) हॉर्न पर प्रतिबंध।

(iv) चौड़ाई सीमा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर.8 पत्र क्रमांक - 101/ रा.उ.र/ 71

दिनांक - 16-मार्च-19

प्रेषक :- तहसीलदार,
भीण्डर ।

सेवा में,

जिलाधीश महोदय,
उदयपुर ।

विषय: जल-व्यवस्था हेतु बजट की मांग ।

मान्यवर,

पत्र क्रमांक - 79/ रा.उ.र/69, 9 फरवरी 2019 को जिला जल व्यवस्था कार्यालय में भेजा गया था, पत्र में तहसील (भीण्डर) में अत्यधिक जल-संकट का वर्णन किया गया था, इस विकराल समस्या से लड़ने के लिए धन-राशि भी माँगी गई थी, किन्तु उक्त विषय में यह सूचित किया जाता है कि वह धन-राशि पर्याप्त नहीं है।

अतः आप अतिशीघ्र 1,000,00/- का बजट भिजवाएँ, जिससे समस्या से लड़ा जा सके।

भवदीय,

धन्यवाद !

इति श्रीवास्तवा
तहसीलदार (भीण्ड

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर.7 विद्यार्थी जीवन में अनुशासन -

"मंजिल उन्हीं को मिलती है
जिनके परों में जान होती है,
सपनों से कुछ नहीं होता
हौसलों से बाजी जीती जाती है"।

प्रस्तावना - अनुशासन का अर्थ → अनुशासन शब्द का निर्माण 'दो शब्दों' के मेल से होता है। 'अनु' तथा 'शासन'। अनु एक उपसर्ग है जिसका अर्थ है - 'पीछे' तथा शासन पद से जब इसका यो होता है तो इसका अर्थ हो जाता है - शासन (नियम) के अनुसार। अर्थात कर्त्तव्यनिष्ठा एवं कर्त्तव्यपरायणता का भाव अभिव्यक्त करते हुए नियमों एवं विनियमों की अनुपालना करना, अनुशासन एक ऐसा भाव होता है जो व्यक्ति में कड़ी-तपस्या एवं मेहनत के बाद आता है। इस भाव को स्वयं में उजागर करने के लिए दृढ़-निश्चयी होना अत्यावश्यक है। अनुशासन सभी के जीवन में आवश्यक होता है किन्तु मूल रूप से यह विद्यार्थी जीवन में महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि एक आदर्श विद्यार्थी ही, आदर्श राष्ट्र की नींव रखता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) अनुशासन से लाभ, अनुशासन हीनता से नुकसान :- अनुशासन विद्यार्थी को सफल बनाने में सहायता करता है। यह वह गुण होता है, जिसे कर्मठ बनकर ही लिया जाता है क्योंकि कर्मठ व्यक्ति ही स्वानुशासित होता है जिस विद्यार्थी में अनुशासन आ जाता है, वह कठिन-से-कठिन परिस्थिति में, डटा रहता है, वह अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा से करता है। एक अनुशासन हीन विद्यार्थी विद्यालय का परिवेश खराब करता है उसके लिए जीवन में सफलता एवं प्रगति का कोई महत्त्व नहीं होता है ऐसे विद्यार्थी माँ-बाप के जीवन को भी शोकग्रस्त कर देता है, समाज में हँसी का पात्र बनता है।

(iii) अनुशासन में रहना कैसे सीखा जा सकता है? :- यह एक गंभीर प्रश्न बन जाता है कि अनुशासित कैसे रहें, तो इसका सबसे सरल उपाय है- स्वयं से बातें करना एवं कमियो को दूर करना। क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं से प्रश्न पूछता है, उसे हमेशा अपने गुणों एवं दोषों का बोध होता है और वही व्यक्ति म दोषों को स्वयं से दूर कर सकता है। और

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

यदि किसी विद्यार्थी ने दोषों को मिटान सीख लिया वह स्वतः ही नियमों का पालन करने लगता है और अनुशासित हो जाता है।

(iii) उपसंहार - अनुशासन का महत्त्व हमने समझ लिया, इसलिए अब आवश्यक है कि अनुशासन को आत्मसात किया जाए तभी सभी का विकास हो सकता है, अनुशासित विद्यार्थी देश को प्रगति की चरम सीमा पर पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है।

'पुरूष हो पुरूषार्थ करो,
उठो, असफलता को पूo त्यागो,
उठो, असफलता एक चुनौती है,
इसमें न यश है न प्रताप है।"